Post-EventReport

Event	संवाद
Topic	शख़्सियत से मुलाक़ात
Organizer	हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की हिंदी साहित्य सभा 'मंथन'
Date	**27/01/2022**
Time	**12:00**
Duration	**02:00**
Place/Platform	ज़ूम
Number of Participants	**50**
Guest Speaker/Trainer	ममता कालिया
Welcome Speech	महेंद्र प्रताप सिंह
Introduction to the Speaker	महेंद्र प्रताप सिंह

Activities

नई दिल्ली, **27** जनवरी, **2022,** श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की हिंदी साहित्य सभा 'मंथन' द्वारा ‘आज़ादी के अमृत महोत्सव’ के उपलक्ष्य में 'शख़्सियत से मुलाक़ात' शृंखला को प्रारंभ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता

ममता कालिया (कथाकार, शिक्षक और कवि) रहीं। कार्यक्रम की शुरुआत कार्यक्रम संयोजक 'महेंद्र प्रताप सिंह' ने अपने स्वागत वक्तव्य के साथ किया। जिसके बाद हिंदी विशेष तृतीय वर्ष की छात्रा सुभाषिनी नेहा पांडे ममता कालिया जी से वार्तालाप किया।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थी एवं शिक्षकों द्वारा ममता कालिया से पूछे गए प्रश्नों का जबाब उन्होंने बड़ी बारीकी एवं सकारात्मकता के साथ दिया। अपने वक्तव्य से उन्होंनें सभी को उत्साह से भर दिया। कार्यक्रम के दौरान कॉलेज के सभी विभागों के प्राध्यापक व विद्यार्थी मौजूद थे। अंत में विभाग प्रभारी डॉ. अंजु बाला ने ममता कालिया जी के प्रभाव और सहयोग की बात करते हुए औपचारिक रूप से सबका धन्यवाद किया।

Main Ideas

ममता कालिया जी ने अपने जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि मेरी प्रारंभिक शिक्षा गाजियाबाद के कॉन्वेंट स्कूल से आरंभ हुई। मैंने शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से की। पिता के तबादले के कारण अपनी स्कूली पढाई गाजियाबाद, दिल्ली, नागपुर, मुंबई, पुणे, इंदौर के विद्यालयों में ग्रहण की। इंदौर के विक्रम विश्वविद्यालय से सन 1961 में बी.ए. की परीक्षा उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण की और दिल्ली विश्वविद्यालय से सन 1963 में अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद दौलतराम कॉलेज, दिल्ली में प्राध्यापक की नौकरी मिली। वह आगे बताती हैं कि चंडीगढ़ की एक साहित्यिक गोष्ठी में ममता जी

की भेंट रवीन्द्र कालिया जी से हुई। रवीन्द्र जी और ममता जी दोनों एक–दूसरे के व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि 12 दिसम्बर, 1964 में प्रणय सूत्र में बंध गए। शादी के समय रवीन्द्र जी टाइम्स ऑफ इण्डिया में कार्यरत थे। विवाह समारोह में हिन्दी साहित्य जगत के बहुचर्चित रचनाकार जेनेंद्र, मोहन राकेश, कमलेश्वर, प्रभाकर माचवे, मुन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती आदि शामिल हुए थे। ममता जी ने अपने पति रवीन्द्र जी के लिए अपना भविष्य अनेक बार दाँव पर लगाया।

उन्होंने अपने वैवाहिक जीवन में अथाह संघर्ष और कष्ट का सामना किया। नौकरियाँ छोड़ी, परन्तु अडिग रहीं अपने पति के कदम–से–कदम तथा कंधे–से–कंधा मिला कर चली। कभी भी आत्म–विश्वास कम न होने दिया। 'रवीन्द्र जी ने 'धर्मयुग' की नौकरी से इस्तीफा दे, साझेदारी में प्रेस की शुरुआत की, मगर 'स्वाधीनता प्रेस' ने उन्हें सड़क पर ला खड़ा कर दिया। इस वजह से रवीन्द्र जी मुंबई से इलाहाबाद वापस आ गए तो ममता जी भी नौकरी छोड़कर इलाहाबाद आ गई।

ममता जी आगे बताती हैं कि बचपन से ही उनको साहित्यिक परिवेश मिला। पिता हिन्दी और अंग्रेजी विषय के साहित्य में रूझान रखते थे और आपके चाचा भारत भूषण अग्रवाल उस समय के प्रख्यात साहित्यकार थे। बी.ए. की पढाई के दौरान ही ममता जी ने कविताएँ लिखना आरंभ कर दिया। 'जागरण' अखबार के रविवारीय अंक में पहली कविता 'प्रयोगवाद प्रियतम' छपी। ममता जी 1960 से ही साहसी और उत्तेजक कविताओं की रचना की। इन

कविताओं ने सभी साहित्यकारों का ध्यान आकर्षित कर लिया। ममता जी के आरंभिक कविताओं में आक्रोश प्रतीत होता है। ममता कालिया जी अपनी रचनाओं और नवीन साहित्यिक प्रयोग के कारणों की बात की और समाज के विभिन्न पक्ष की बात की ।	
Vote of thanks	डॉ. अंजु बाला

Poster (Attach below)

Pictures (Attach Five Photos)

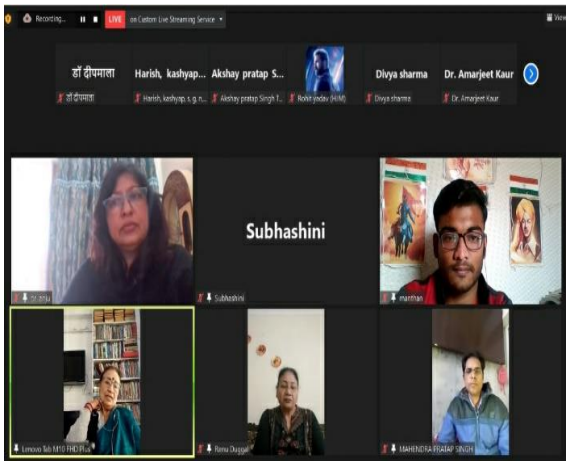

Attach Photocopy of two Certificates

Signature: 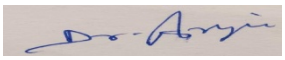

Name: डॉ. अंजु बाला

(Convenor)